



प्रेस विज्ञप्ति

**आईआईटी भुवनेश्वर में आयोजित 30वें आईसीएमएस में जलवायु अनुसंधान
और ऊर्जा सुरक्षा में माइक्रोफॉसिल की भूमिका पर प्रकाश डाला गया**

भुवनेश्वर, 12 जून 2026: इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी (आईआईटी) भुवनेश्वर में तीन दिन तक चले 30वें इंडियन कोलोक्वियम ऑन माइक्रो-पैलियोन्टोलॉजी एंड स्ट्रैटिग्राफी (आईसीएमएस-2026) का समापन हुआ। इस कार्यक्रम में पृथ्वी विज्ञान के प्रमुख वैज्ञानिकों, शोधकर्ताओं और इंडस्ट्री के विशेषज्ञों ने जलवायु परिवर्तन, ऊर्जा सुरक्षा और संसाधनों के टिकाऊ प्रबंधन से जुड़ी चुनौतियों से निपटने में माइक्रो-पैलियोन्टोलॉजी और स्ट्रैटिग्राफी की भूमिका पर चर्चा की।

आईआईटी भुवनेश्वर के 'स्कूल ऑफ अर्थ, ओशन एंड क्लाइमेट साइंसेज़' (SEOCS) द्वारा आयोजित यह कार्यक्रम एक अहम उपलब्धि थी, क्योंकि 1971 में शुरू होने के बाद से इस प्रतिष्ठित कोलोक्वियम (विशेषज्ञों की चर्चा) की मेज़बानी करने वाला IIT भुवनेश्वर पहला भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान (आईआईटी) बन गया। इस कॉन्फ्रेंस में 234 रिसर्च एबस्ट्रैक्ट (शोध सारांश) मिले और 145 से ज़्यादा पोस्टर प्रेजेंटेशन हुए। इसके साथ ही, इसमें प्लेनरी लेक्चर, मुख्य भाषण और टेक्निकल सेशन भी शामिल थे, जिनमें बायोस्ट्रैटिग्राफी, पैलियोक्लाइमेटोलॉजी, पैलियोओशनोग्राफी, मरीन जियोलॉजी, जियोक्रोनोलॉजी, पर्यावरण में बदलाव, ऊर्जा की खोज और जियोसाइंस में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के इस्तेमाल जैसे विषयों पर चर्चा की गई।

उद्घाटन समारोह में आईआईटी भुवनेश्वर के डायरेक्टर प्रो. श्रीपाद करमलकर; नई दिल्ली स्थित इंटर-यूनिवर्सिटी एक्सेलेरेटर सेंटर (IUAC) के डायरेक्टर प्रो. अविनाश सी. पांडे; लखनऊ स्थित बीरबल साहनी इंस्टीट्यूट ऑफ पैलियोसाइंसेज (BSIP) के डायरेक्टर प्रो. महेश जी. ठक्कर; बेंगलुरु स्थित यूनिवर्सिटी विश्वेश्वरैया कॉलेज ऑफ इंजीनियरिंग (UVCE) के डायरेक्टर और आईआईटी भुवनेश्वर के SEOCS के पूर्व हेड प्रो. सुभाषीष त्रिपाठी; जियोलॉजिकल सर्वे ऑफ इंडिया के डिप्टी डायरेक्टर जनरल श्री संजय कुमार डैश; IIT खड़गपुर के प्रोफेसर और अर्थ साइंसेज में ANRF-ARG प्रोग्राम के को-चेयरमैन प्रो. अनिल के. गुप्ता; और 30वें ICMS के प्रेसिडेंट और दिल्ली यूनिवर्सिटी के प्रोफेसर प्रो. देवेश के. सिन्हा शामिल हुए।

कॉन्फ्रेंस को संबोधित करते हुए, IIT भुवनेश्वर के डायरेक्टर प्रोफेसर श्रीपाद करमलकर ने इस बात पर जोर दिया कि माइक्रोपैलियोन्टोलॉजी और स्ट्रैटिग्राफी अब सिर्फ एकेडमिक रिसर्च तक सीमित नहीं रह गए हैं, बल्कि हाइड्रोकार्बन की खोज, रिसोर्स मैपिंग और ग्लोबल क्लाइमेट डायनामिक्स को समझने के लिए ज़रूरी टूल बन गए हैं। उन्होंने बताया कि माइक्रोफॉसिल से प्राचीन वातावरण, विकासवादी बदलावों और जलवायु की बड़ी घटनाओं के बारे में अहम जानकारी मिलती है, जिसका सीधा असर ऊर्जा सुरक्षा और पर्यावरण की स्थिरता पर पड़ता है।

वक्ताओं ने सामूहिक रूप से पृथ्वी विज्ञान अनुसंधान को आगे बढ़ाने में अंतर-विषयक अनुसंधान, उन्नत विश्लेषणात्मक सुविधाओं और आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस व मशीन लर्निंग जैसी उभरती हुई तकनीकों के महत्व पर जोर दिया। उन्होंने युवा शोधकर्ताओं से जलवायु लचीलेपन, टिकाऊ संसाधन अन्वेषण और पर्यावरण संरक्षण से जुड़ी भविष्य की चुनौतियों का समाधान करने के लिए इन उपकरणों और सहयोगों का लाभ उठाने का आह्वान किया।

अध्यक्षीय भाषण देते हुए, प्रो. देवेश के. सिन्हा ने पृथ्वी के इतिहास को समझने और विकासवादी प्रक्रियाओं को जानने में माइक्रो-पैलियोन्टोलॉजी (सूक्ष्म-जीवाश्म विज्ञान) के स्थायी महत्व पर जोर दिया। सम्मेलन का समापन प्रतिभागियों के इस साझा संकल्प के साथ हुआ कि वे पृथ्वी के अतीत को समझने, वर्तमान पर्यावरणीय चुनौतियों का समाधान करने और एक अधिक टिकाऊ भविष्य बनाने के उद्देश्य से अंतर-विषयक शोध सहयोग को मज़बूत करेंगे।

स्कूल ऑफ अर्थ, ओशन एंड क्लाइमेट साइंसेज़ के प्रमुख और 30वें ICMS-2026 के संयोजक डॉ. राज के. सिंह ने स्वागत भाषण दिया और कार्यक्रम के आयोजन सचिव डॉ. सौरव सिल ने उद्घाटन सत्र में धन्यवाद प्रस्ताव पेश किया।

कॉन्फ्रेंस के दौरान, वैज्ञानिकों ने बताया कि कैसे तलछटी रिकॉर्ड में सुरक्षित सूक्ष्म जीवाश्म (microscopic fossils) प्राचीन जलवायु को फिर से समझने, समुद्र और वायुमंडल में हुए पुराने बदलावों को जानने, जैव-विविधता के विकास को ट्रैक करने, हाइड्रोकार्बन वाली परतों की पहचान करने और भविष्य के पर्यावरणीय हालात का अनुमान लगाने के लिए ज़रूरी डेटासेट तैयार करने में मदद करते हैं। चर्चाओं में पृथ्वी प्रणाली की प्रक्रियाओं को बेहतर ढंग से समझने के लिए माइक्रो-पैलियोन्टोलॉजी (सूक्ष्म जीवाश्म विज्ञान) को जियोकेमिस्ट्री, सेडिमेंटोलॉजी, आइसोटोप स्टडीज़, मॉलिक्यूलर बायोलॉजी और डेटा-आधारित तरीकों के साथ जोड़ने पर जोर दिया गया।

टेक्निकल सेशन में जियोलॉजिकल टाइमस्केल पर जलवायु में बदलाव, मॉनसून के विकास, समुद्र में पानी के बहाव के पैटर्न, समुद्र के जलस्तर में उतार-चढ़ाव, पुराने पर्यावरण के पुनर्निर्माण और बेसिन के विकास जैसे विषयों पर चर्चा की गई। एक मुख्य बात जो सामने आई, वह थी फॉसिल की पहचान, जियोलॉजिकल डेटा की व्याख्या और पुराने पर्यावरण के अध्ययन में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस, मशीन लर्निंग और मॉलिक्यूलर तरीकों जैसी एडवांस्ड टेक्नोलॉजी की बढ़ती भूमिका। समापन समारोह में नेशनल सेंटर फॉर अर्थ साइंसेज़ स्टडीज़ के डायरेक्टर प्रो. एन. वी. चलापति राव और अन्य गणमान्य व्यक्ति शामिल हुए।
